गुरु तेग बहादुर जी पर कविता (शहादत पर)

ये कहानी बड़ी पुरानी है
ये वीरों वाली वाणी है।
ये शीश धरा पर धरा नहीं
शीश कटा पर झुका नहीं।
ये गुरु तेग बहादुर का धर्म मानव
संस्कृतिक विरासत के लिए दिया
बलिदान था।
जब मुगलों ने अत्याचार किए
धर्म परिवर्तन के प्रहार किए
फिर भी आँसू उन्होंने बहाए नहीं
तेग बहादुर, कायर कहलाए नहीं
जब औरंगजेब मिलने आया था
इस्लाम धर्म कबूल कराने का
फरमान लाया था, वो भी सिख
सपूत थे, वो शीश कटा सकते थे,
लेकिन केश कटा नहीं सकते थे।
ये शीश धरा पराधरा नहीं
शीश कटा पर झुका नहीं
शीश कटा उन्होंने अपना धर्म बचाय
था, वही महान पुरुष तेग बहादुर कहलाया
था।